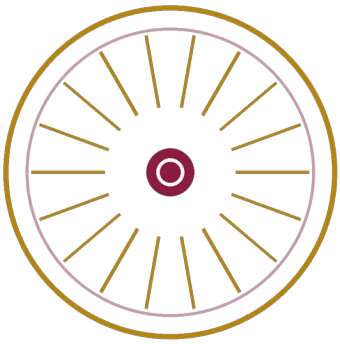

# अध्याय 10: विभूतियोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.1**

> श्रीभगवानुवाच
>
> भूय एव महाबाहो श्रृणु मे परमं वचः |
>
> यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया || **1** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्रीभगवान बोले—हे महाबाहो! फिर भी मेरे परम रहस्यमय वचनों को सुन, जिसे मैं तुझ जैसे अति प्रेमी भक्त के हित की इच्छा से कहूँगा।

सरल व्याख्या:

भगवान अर्जुन की बढ़ती हुई श्रद्धा और प्रेम को देखकर स्वयं आगे बढ़कर ज्ञान देना चाहते हैं। वे कहते हैं कि जो मैं पहले कह चुका हूँ, अब उससे भी गूढ़ बातें बताऊंगा। यह ईश्वर की कृपा है कि जब भक्त सुनने के लिए आतुर होता है, तो परमात्मा स्वयं उसका हित करने के लिए ज्ञान की वर्षा करते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा का ज्ञान केवल तर्क से नहीं, बल्कि प्रेम और पात्रता से प्राप्त होता है।

श्लोक संख्या: **10.2**

> न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः |
>
> अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः || **2** ||

हिन्दी अनुवाद:

मेरी उत्पत्ति (प्रभाव) को न देवता जानते हैं और न महर्षिगण; क्योंकि मैं सब प्रकार से देवताओं और महर्षियों का भी आदि कारण हूँ।

सरल व्याख्या:

ईश्वर का कोई जन्म नहीं होता, वे अजन्मे हैं। चूँकि देवता और ऋषि भी उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं, इसलिए वे अपनी बुद्धि से उस 'अन्तिम सत्य' को नहीं नाप सकते जो उनके पैदा होने से भी पहले था। बच्चा अपने पिता के जन्म का गवाह नहीं हो सकता, वैसे ही सृष्टि का कोई भी जीव परमात्मा के आदि को नहीं जान सकता।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा बुद्धि और तर्क की सीमा से परे हैं क्योंकि वे ही सबके मूल स्रोत हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.3**

> यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् |
> असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते || **3** ||

हिन्दी अनुवाद:
जो मुझे अजन्मा, अनादि और लोकों का महान ईश्वर तत्व से जानता है, वह मनुष्यों में ज्ञानवान पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाता है।

सरल व्याख्या:
संसार की हर वस्तु का आदि (शुरुआत) और अंत है, पर परमात्मा 'अनादि' हैं। जो इस सत्य को केवल शब्दों से नहीं बल्कि अनुभव से जान लेता है, उसका मोह भंग हो जाता है। ऐसा व्यक्ति संसार में रहते हुए भी कर्मों के लेप (पापों) से अछूता रहता है क्योंकि उसकी दृष्टि अविनाशी पर टिक गई है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का बोध ही समस्त पापों और बंधनों से मुक्ति का मार्ग है।

श्लोक संख्या: **10.4-5**

> बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः |
> सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च || **4** ||
> अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः |
> भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः || **5** ||

हिन्दी अनुवाद:
निश्चय करने की शक्ति (बुद्धि), यथार्थ ज्ञान, मोह का अभाव, क्षमा, सत्य, इंद्रिय निग्रह, मन का निग्रह, सुख-दुख, जन्म-मृत्यु, भय-अभय, अहिंसा, समता, संतोष, तप, दान, यश और अपयश—प्राणियों के ये नाना प्रकार के भाव मुझ (परमात्मा) से ही उत्पन्न होते हैं।

सरल व्याख्या:
यहाँ भगवान स्पष्ट करते हैं कि हमारे भीतर उठने वाली हर मानसिक वृत्ति और संसार की हर स्थिति उन्हीं की सत्ता से है। चाहे वह सद्गुण हों या जीवन के उतार-चढ़ाव, सब ईश्वरीय विधान के अंतर्गत हैं। जब हम यह समझ लेते हैं कि 'यश' और 'अपयश' दोनों के मूल में वही हैं, तो हमारे भीतर 'समता' आने लगती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मनुष्य के स्वभाव की हर विशेषता और जीवन की हर परिस्थिति का परम स्रोत परमात्मा ही है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.6**

> महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा |
> मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः || **6** ||

हिन्दी अनुवाद:

सात महर्षि, उनसे भी पूर्व होने वाले चार सनकादि और चौदह मनु—ये सब मेरे भाव वाले (मुझमें मन वाले) मेरे ही संकल्प से उत्पन्न हुए हैं, जिनकी संसार में यह संपूर्ण प्रजा है।

सरल व्याख्या:

सृष्टि के संचालन के लिए जो मुख्य शक्तियाँ या पूर्वज (ऋषि और मनु) माने गए हैं, वे भी परमात्मा के ही 'मान संकल्प' से प्रकट हुए हैं। इसका अर्थ है कि पूरी मानवता और यह ज्ञान परंपरा एक ही ईश्वरीय चेतना की शाखाएँ हैं। हम सब एक ही मूल से जुड़े हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... समस्त सृष्टि का वंश और ज्ञान का प्रवाह परमात्मा के ही संकल्प का विस्तार है।

श्लोक संख्या: **10.7**

> एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः |
> सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः || **7** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो मनुष्य मेरी इस दिव्य विभूति (ऐश्वर्य) और योग-शक्ति को तत्व से जानता है, वह निश्चल (अटल) भक्ति योग द्वारा मुझमें स्थित हो जाता है—इसमें कोई संशय नहीं है।

सरल व्याख्या:

जब कोई व्यक्ति यह गहराई से समझ लेता है कि हर महानता और शक्ति के पीछे परमात्मा ही काम कर रहे हैं, तो उसकी श्रद्धा डगमगाना बंद कर देती है। फिर वह हर जगह ईश्वर को ही देखता है। यही 'अटल योग' है, जहाँ साधक का मन संसार से हटकर सत्य में स्थिर हो जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की सर्वव्यापकता का ज्ञान ही भक्ति को दृढ़ और स्थिर बनाता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.8**

> अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते |
> इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः || **8** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं ही संपूर्ण जगत की उत्पत्ति का कारण हूँ और मुझसे ही सब कुछ गतिशील (प्रवृत्त) होता है—ऐसा मानकर बुद्धिमान भक्त परम श्रद्धा से युक्त होकर निरंतर मेरा ही भजन करते हैं।

सरल व्याख्या:

जैसे समुद्र से लहरें उठती हैं और समुद्र में ही विलीन होती हैं, वैसे ही यह संसार ईश्वर से ही निकलता और चलता है। जो इस रहस्य को जान लेते हैं, वे फिर बाहरी कर्मकांडों में नहीं उलझते, बल्कि 'भाव' के साथ सीधे परमात्मा से जुड़ जाते हैं। उनके लिए हर कार्य पूजा बन जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा को सबका मूल जानकर हृदय से उनकी शरण लेना ही वास्तविक बुद्धिमानी है।

श्लोक संख्या: **10.9**

> मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् |
> कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च || **9** ||

हिन्दी अनुवाद:

मुझमें निरंतर मन लगाने वाले और मुझमें ही प्राणों को अर्पण करने वाले भक्तजन आपस में मेरे गुणों और प्रभाव की चर्चा करते हुए सदा संतुष्ट रहते हैं और मुझमें ही आनंद पाते हैं।

सरल व्याख्या:

सच्चे भक्तों का लक्षण यहाँ बताया गया है। उनका जीवन परमात्मा के इर्द-गिर्द घूमता है। वे जब भी मिलते हैं, ईश्वर की ही बातें करते हैं और एक-दूसरे को प्रेरित करते हैं। उन्हें संसार के विषयों में नहीं, बल्कि हरि-चर्चा और चिंतन में ही परम तृप्ति और सुख मिलता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भक्ति में संकीर्तन और सत्संग (परस्पर चर्चा) साधक को असीम शांति और रस प्रदान करते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.10**

> तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् |
> ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते || **10** ||

हिन्दी अनुवाद:

उन निरंतर (मुझसे) जुड़े हुए और प्रेमपूर्वक भजने वाले भक्तों को मैं वह 'बुद्धियोग' (समत्व बुद्धि का ज्ञान) देता हूँ, जिससे वे मुझे ही प्राप्त होते हैं।

सरल व्याख्या:

साधक का काम है केवल 'प्रेमपूर्वक' जुड़ना। फिर उसे कैसे पहुँचना है, कौन सा ज्ञान चाहिए, यह जिम्मेदारी परमात्मा स्वयं लेते हैं। वे भक्त के भीतर ऐसी बुद्धि जागृत कर देते हैं जिससे वह सही-गलत का भेद कर सके और सीधा ईश्वर तक पहुँच जाए। यह बुद्धि मनुष्य खुद नहीं पैदा कर सकता, यह प्रभु का उपहार है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जो प्रेम से ईश्वर की ओर कदम बढ़ाता है, उसे मंजिल तक पहुँचाने वाली 'बुद्धि' स्वयं परमात्मा देते हैं।

श्लोक संख्या: **10.11**

> तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः |
> नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता || **11** ||

हिन्दी अनुवाद:

उन भक्तों पर कृपा करने के लिए ही, मैं उनके अंतःकरण में स्थित होकर, अज्ञान से उत्पन्न होने वाले अंधकार को प्रकाशमय 'ज्ञान रूपी दीपक' द्वारा नष्ट कर देता हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान कहते हैं कि जो मेरी शरण में है, उसे अज्ञान से डरने की जरूरत नहीं। मैं स्वयं उसके हृदय में बैठकर विवेक का दीया जला देता हूँ। जैसे सूरज निकलते ही अंधेरा गायब हो जाता है, वैसे ही ईश्वर की कृपा से भ्रम के सारे पर्दे हट जाते हैं और सत्य का साक्षात्कार होता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अज्ञान को मिटाने का पुरुषार्थ मनुष्य अकेला नहीं करता, बल्कि परमात्मा स्वयं भीतर से सहायता करते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.12-13**

> अर्जुन उवाच
>
> परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् |
>
> पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् || **12** ||
>
> आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा |
>
> असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:

अर्जुन बोले—आप परम ब्रह्म, परम धाम और परम पवित्र हैं। आपको समस्त ऋषि, देवर्षि नारद, असित, देवल तथा व्यास सनातन, दिव्य पुरुष, देवों के आदि देव, अजन्मा और सर्वव्यापी कहते हैं; और अब स्वयं आप भी मुझसे यही कह रहे हैं।

सरल व्याख्या:

भगवान के वचनों को सुनकर अर्जुन को पूर्ण विश्वास हो गया है। वे स्वीकार करते हैं कि जो बात बड़े-बड़े महापुरुषों ने कही थी, आज वे साक्षात आपके मुख से सुन रहे हैं। अर्जुन यहाँ भगवान के निराकार और साकार दोनों रूपों की महिमा का गान कर रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जब संतों के वचनों और स्वयं के अनुभव का मिलन होता है, तो श्रद्धा अटूट हो जाती है।

श्लोक संख्या: **10.14**

> सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव |
>
> न ही ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे केशव! आप मुझसे जो कुछ भी कह रहे हैं, उसे मैं पूर्णतः सत्य मानता हूँ। हे भगवान! आपके इस लीला-मय स्वरूप को न तो देवता जानते हैं और न ही दानव।

सरल व्याख्या:

अर्जुन कहते हैं कि प्रभु, आपकी शक्ति को सीमित बुद्धि से नहीं समझा जा सकता। देवता अपनी सात्विकता के अहंकार में और दानव अपनी तामसिकता के कारण आपको नहीं पहचान पाते। आपकी लीला को समझने के लिए आपकी कृपा ही एकमात्र साधन है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर के रहस्यों को जानने के लिए केवल बुद्धि काफी नहीं, पूर्ण समर्पण और विश्वास आवश्यक है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.15**

> स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम |
> भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे प्राणियों को उत्पन्न करने वाले! हे भूतों के ईश्वर! हे देवों के देव! हे जगत के स्वामी! हे पुरुषोत्तम! आप स्वयं ही अपने आप से अपने आप को जानते हैं।

सरल व्याख्या:
कोई भी वस्तु अपने से बड़ी वस्तु को नहीं नाप सकती। चूँकि पूरा ब्रह्मांड परमात्मा के भीतर है, इसलिए ब्रह्मांड का कोई भी जीव उन्हें पूरी तरह नहीं जान सकता। केवल परमात्मा ही अपनी महिमा को स्वयं जानते हैं। यहाँ अर्जुन भगवान को 'पुरुषोत्तम' कहकर संबोधित कर रहे हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा स्वयं प्रकाश हैं, उन्हें जानने वाला उनके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।

श्लोक संख्या: **10.16**

> वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः |
> याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:
अतः आप अपनी उन दिव्य विभूतियों को संपूर्णता से कहने के योग्य हैं, जिन विभूतियों के द्वारा आप इन समस्त लोकों को व्याप्त करके स्थित हैं।

सरल व्याख्या:
अर्जुन प्रार्थना कर रहे हैं कि प्रभु, आप अपनी उन खास शक्तियों और रूपों के बारे में विस्तार से बताइये जिनके माध्यम से आप इस संसार के कण-कण में मौजूद हैं। अर्जुन उन 'चिह्नों' को जानना चाहते हैं जिन्हें देखकर वे हर जगह ईश्वर का अनुभव कर सकें।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जिज्ञासु भक्त संसार की वस्तुओं में भी ईश्वर की ही झलक देखना चाहता है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.17**

> कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् |
>
> केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे योगेश्वर! मैं निरंतर चिंतन करता हुआ आपको कैसे जानूँ? और हे भगवन! किन-किन भावों (पदार्थों) में मेरे द्वारा आपका चिंतन किया जाना चाहिए?

सरल व्याख्या:

अर्जुन एक बहुत ही व्यावहारिक प्रश्न पूछ रहे हैं। "प्रभु, जब मैं संसार में व्यवहार करूँ, तो किन चीजों को देखकर मुझे आपकी याद आए? मैं अपनी आंखों के सामने दिखने वाली इस दुनिया में आपको कैसे ढूँढूँ?" यह हर साधक की जिज्ञासा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... निरंतर ईश्वर के चिंतन के लिए संसार के रूपों में ईश्वर की सत्ता को पहचानना जरूरी है।

श्लोक संख्या: **10.18**

> विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन |
>
> भूयः कथय तृप्तिर्हि श्रृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे जनार्दन! अपनी योग-शक्ति और विभूति को फिर से विस्तार से कहिये; क्योंकि आपके अमृतमयी वचनों को सुनते हुए मेरी तृप्ति नहीं हो रही है।

सरल व्याख्या:

अर्जुन कहते हैं कि आपकी बातें मेरे लिए अमृत के समान हैं। इसे जितना सुनता हूँ, और सुनने की इच्छा बढ़ती जाती है। भक्ति का आनंद ऐसा ही होता है—वहाँ 'बस' (संतोष) नहीं होता, बल्कि प्यास और बढ़ती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ईश्वर की कथा और उनके गुणों का श्रवण कभी न खत्म होने वाला दिव्य आनंद प्रदान करता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.19**

> श्रीभगवानुवाच
>
> हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः |
>
> प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्रीभगवान बोले—हे कुरुश्रेष्ठ! अब मैं तुझसे अपनी दिव्य विभूतियों को मुख्य-मुख्य रूप से कहूँगा; क्योंकि मेरे विस्तार का कोई अंत नहीं है।

सरल व्याख्या:

भगवान मुस्कुराते हुए कहते हैं कि मेरी शक्तियाँ तो अनंत हैं, उन्हें पूरा बताना तो असंभव है। लेकिन मैं तुम्हें वे प्रमुख रूप बताऊँगा जहाँ मेरी सत्ता का प्रकाश सबसे ज्यादा चमकता है, ताकि तुम मुझे आसानी से पहचान सको।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा अनंत हैं, पर उनकी कृपा उन्हें कुछ विशेष प्रतीकों के माध्यम से हमारे लिए सुलभ बना देती है।

श्लोक संख्या: **10.20**

> अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः |
>
> अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे गुडाकेश (नींद को जीतने वाले अर्जुन)! मैं समस्त प्राणियों के हृदय में स्थित सबका 'आत्मा' हूँ तथा मैं ही समस्त भूतों का आदि, मध्य और अंत भी हूँ।

सरल व्याख्या:

यह इस अध्याय का सबसे महत्वपूर्ण श्लोक है। भगवान सबसे बड़ी विभूति बताते हैं—'आत्मा'। वे कहते हैं कि मैं कहीं बाहर नहीं, बल्कि हर जीव के भीतर चैतन्य रूप में बैठा हूँ। सृष्टि की शुरुआत मुझसे है, इसका टिकाव मुझमें है और इसका अंत भी मुझमें ही होगा।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... स्वयं के भीतर बैठी हुई आत्मा ही परमात्मा का सबसे साक्षात और निकटतम रूप है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.21**

> आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् |
> मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी || **21** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं अदिति के बारह पुत्रों (आदित्यों) में विष्णु हूँ, ज्योतियों में प्रकाशमान सूर्य हूँ, वायु के उनचास वेगों (मरुद्गणों) में मरीचि हूँ और नक्षत्रों में चंद्रमा हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान समझा रहे हैं कि जहाँ भी कोई विशेष तेज या शक्ति दिखे, वह उन्हीं का अंश है। अदिति के पुत्रों में 'विष्णु' सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं। दिन के प्रकाश में सूर्य और रात्रि की शीतलता में चंद्रमा के रूप में वही सत्ता प्रकाशित हो रही है। इसका अर्थ है कि समस्त ब्रह्मांडीय ऊर्जा के केंद्र स्वयं परमात्मा ही हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... आकाश की समस्त दिव्य ज्योतियों और प्राकृतिक शक्तियों में जो श्रेष्ठता है, वह ईश्वर की ही उपस्थिति है।

श्लोक संख्या: **10.22**

> वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः |
> इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना || **22** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं वेदों में सामवेद हूँ, देवताओं में इंद्र हूँ, इंद्रियों में मन हूँ और प्राणियों में रहने वाली चेतना (जीवन-शक्ति) हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान अपनी व्यापकता को हर क्षेत्र में बता रहे हैं। वेदों में मधुरता के कारण 'सामवेद' को वे अपना स्वरूप कहते हैं। हमारे शरीर में दस इंद्रियाँ हैं, लेकिन उन्हें नियंत्रित करने वाला 'मन' भगवान की विभूति है। सबसे महत्वपूर्ण बात, किसी भी जीव के जीवित रहने का जो प्रमाण है—उसकी 'चेतना'—वह साक्षात परमात्मा ही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ज्ञान, शासन, मानसिक शक्ति और जीवन का स्पंदन—इन सबके मूल में परमात्मा की ही शक्ति काम कर रही है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.23**

> रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम् |
> वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् || **23** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं ग्यारह रुद्रों में शंकर हूँ, यक्ष और राक्षसों में धन का स्वामी कुबेर हूँ, आठ वसुओं में अग्नि हूँ और शिखर वाले पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान अपनी विभूतियों को कल्याणकारी और ऐश्वर्यशाली रूपों में प्रकट कर रहे हैं। रुद्रों में जो संहार और कल्याण के अधिपति शिव (शंकर) हैं, वह प्रभु का ही रूप हैं। वसुओं में 'अग्नि' का विशेष स्थान है क्योंकि वह शुद्ध करने वाली है। पर्वतों में 'मेरु' अपनी स्थिरता और ऊंचाई के लिए प्रसिद्ध है। इन सबका उद्देश्य यह बताना है कि संसार की हर श्रेष्ठता प्रभु की महिमा का ही बखान करती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जगत की समस्त स्थिरता, शुद्धि, ऐश्वर्य और कल्याणकारी शक्तियों का केंद्र केवल परमात्मा है।

श्लोक संख्या: **10.24**

> पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् |
> सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः || **24** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पार्थ! पुरोहितों में मुख्य 'बृहस्पति' मुझे जान। सेनापतियों में मैं 'स्कन्द' (कार्तिकेय) हूँ और जलाशयों में मैं 'समुद्र' हूँ।

सरल व्याख्या:
बुद्धि और मंत्रों के अधिपति होने के कारण गुरु बृहस्पति भगवान की विभूति हैं। शक्ति और नेतृत्व के प्रतीक के रूप में वे सेनापतियों में कार्तिकेय हैं। जैसे छोटी नदियाँ और सरोवर अंततः समुद्र में मिलते हैं, वैसे ही समस्त जल-राशियों में अपनी विशालता के कारण समुद्र परमात्मा का ही स्वरूप है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ज्ञान की श्रेष्ठता, नेतृत्व की शक्ति और विस्तार की असीमता ईश्वर की ही झांकी है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.25**

> महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् |
> यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः || **25** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं महर्षियों में भृगु हूँ, शब्दों में एक अक्षर 'ओंकार' (ॐ) हूँ, समस्त यज्ञों में 'जप यज्ञ' हूँ और स्थिर रहने वालों में 'हिमालय' पर्वत हूँ।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि तपस्या की पराकाष्ठा 'भृगु' ऋषि मुझमें हैं। वाणी में सबसे पवित्र शब्द 'ॐ' मैं हूँ। यज्ञों में 'जप' सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि इसमें किसी बाहरी दिखावे या हिंसा की आवश्यकता नहीं होती, यह सीधे मन को प्रभु से जोड़ता है। अपनी अडिगता और पवित्रता के कारण हिमालय भी परमात्मा की ही महिमा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मौन साधना (जप), पवित्र शब्द और अडिग स्थिरता के रूप में परमात्मा ही स्थित हैं।

श्लोक संख्या: **10.26**

> अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः |
> गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः || **26** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ, देवर्षियों में नारद हूँ, गन्धर्वों में चित्ररथ हूँ और सिद्धों में कपिल मुनि हूँ।

सरल व्याख्या:
पीपल (अश्वत्थ) अपनी निरंतर प्राणवायु और लंबी आयु के कारण पूजनीय है। भक्ति के प्रचारक नारद और सांख्य शास्त्र के प्रणेता कपिल मुनि—जिन्होंने तत्व ज्ञान दिया—वे सब भगवान के ही विशेष प्रकाश हैं। जहाँ भी संगीत, ज्ञान या भक्ति की चरम सीमा है, वहाँ भगवान ही प्रकट हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... प्रकृति के पूजनीय रूपों और सिद्ध महापुरुषों में ईश्वरीय तत्व ही कार्य करता है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.27**

> उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् |
> ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् || **27** ||

हिन्दी अनुवाद:

घोड़ों में अमृत के साथ उत्पन्न होने वाला 'उच्चैःश्रवा' नाम का घोड़ा मुझे जान, हाथियों में 'ऐरावत' और मनुष्यों में 'राजा' मुझे समझ।

सरल व्याख्या:

समुद्र मंथन से निकले श्रेष्ठ रत्न—उच्चैःश्रवा और ऐरावत—अपनी उत्तमता के कारण परमात्मा के रूप हैं। मनुष्यों में 'राजा' को भगवान की विभूति इसलिए कहा गया है क्योंकि उसका धर्म प्रजा की रक्षा और न्याय करना है। जहाँ भी शासन और पालन की व्यवस्था है, वह ईश्वर की सत्ता से ही चलती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... ऐश्वर्य, शक्ति और न्यायपूर्ण शासन ईश्वर की ही व्यवस्था के अंश हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.28**

> आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक |
>
> प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः || **28** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं शस्त्रों में वज्र हूँ, गौओं में कामधेनु हूँ, संतानोत्पत्ति का कारण 'कामदेव' हूँ और सर्पों में 'वासुकि' हूँ।

सरल व्याख्या:

अन्याय के विनाश के लिए दधीचि की हड्डियों से बना 'वज्र' प्रभु की शक्ति है। सबकी कामनाएं पूर्ण करने वाली 'कामधेनु' और सृष्टि के विस्तार का मूल आधार 'प्रेम' (कामदेव) भी ईश्वर ही हैं। सर्पों के अधिपति वासुकि के रूप में भी वही सत्ता विराजमान है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अधर्म का नाश करने वाली शक्ति और सृजन की निरंतरता परमात्मा का ही रूप है।

श्लोक संख्या: **10.29**

> अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम् |
>
> पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् || **29** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं नागों में 'शेषनाग' हूँ, जलचरों का अधिपति 'वरुण' हूँ, पितरों में 'अर्यमा' और शासन करने वालों में 'यमराज' हूँ।

सरल व्याख्या:

अनंत शक्तिशाली शेषनाग, जो पृथ्वी को धारण किए हैं, वह प्रभु की विभूति हैं। नियम और संयम के प्रतीक यमराज के रूप में भी वही हैं, क्योंकि वे न्यायपूर्वक फल देते हैं। इसका अर्थ है कि मृत्यु और नियमन भी ईश्वरीय विधान का ही हिस्सा है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संसार का नियमन, संयम और आधारभूत शक्तियाँ परमात्मा के ही नियंत्रण में हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.30**

> प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम् |
>
> मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् || **30** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं दैत्यों में 'प्रह्लाद' हूँ, गणना करने वालों में 'समय' हूँ, पशुओं में मृगराज 'सिंह' और पक्षियों में 'गरुड़' हूँ।

सरल व्याख्या:

विरोधी परिस्थितियों में भी जो अनन्य भक्त रहे, वे प्रह्लाद भगवान की प्रिय विभूति हैं। सबसे बलवान और गणना न की जा सकने वाली शक्ति 'समय' (काल) स्वयं परमात्मा हैं। साहस में सिंह और ऊँचाई छूने वाले गरुड़ के रूप में वही तेज दिखाई देता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... भक्ति की पराकाष्ठा और समय की अपराजेय शक्ति साक्षात ईश्वर है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.31**

> पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् |
> झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी || **31** ||

हिन्दी अनुवाद:
मैं पवित्र करने वालों में वायु हूँ, शस्त्रधारियों में श्रीराम हूँ, मछलियों में मगरमच्छ हूँ और नदियों में श्रीगंगा जी हूँ।

सरल व्याख्या:
शुद्धि करने वाली शक्तियों में वायु सर्वोपरि है, जो प्राण का आधार है। मर्यादा और शस्त्रों के आदर्श प्रयोग में भगवान श्रीराम साक्षात परमात्मा की विभूति हैं। जलचरों में अपनी गति और शक्ति के कारण मगरमच्छ और समस्त पवित्र जलधाराओं में माँ गंगा, जो मोक्षदायिनी हैं, वे प्रभु का ही स्वरूप हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पावनता, शौर्य और मोक्ष प्रदान करने वाली समस्त श्रेष्ठ धाराएं परमात्मा से ही प्रवाहित होती हैं।

श्लोक संख्या: **10.32**

> सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन |
> अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् || **32** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे अर्जुन! मैं सृष्टियों का आदि, अंत और मध्य भी हूँ। मैं विद्याओं में 'अध्यात्म विद्या' (ब्रह्मविद्या) हूँ और परस्पर तर्क करने वालों का 'वाद' (सत्य का निर्णय करने वाला तर्क) हूँ।

सरल व्याख्या:
सृष्टि के बनने, टिकने और मिटने का आधार केवल ईश्वर है। संसार में अनेक विद्याएँ हैं, पर वह विद्या जो आत्मा का ज्ञान करा दे, वही सर्वश्रेष्ठ है और वह परमात्मा का रूप है। चर्चाओं में जहाँ व्यर्थ का विवाद नहीं, बल्कि सत्य तक पहुँचने का 'वाद' हो, वह बुद्धि की शक्ति भी ईश्वर ही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... आत्मज्ञान ही समस्त ज्ञान का सार है और परमात्मा ही समय के हर कालखंड के एकमात्र आधार हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.33**

> अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च |
> अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः || **33** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं अक्षरों में 'अकार' (अ) हूँ, समासों में 'द्वन्द्व' समास हूँ। मैं ही अक्षय काल (समय का भी महाकाल) हूँ और सब ओर मुख वाला, सबका भरण-पोषण करने वाला विधाता हूँ।

सरल व्याख्या:

जैसे हर शब्द की शुरुआत 'अ' से होती है और वह हर अक्षर में समाहित है, वैसे ही ईश्वर सबमें व्याप्त हैं। व्याकरण के समासों में 'द्वन्द्व' श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें दोनों पदों की प्रधानता होती है, जो ईश्वर की समता को दर्शाता है। वह समय जो कभी खत्म नहीं होता और वह सत्ता जो बिना मांगे सबको पाल रही है, वह परमात्मा ही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा अविनाशी समय के रूप में सबको अपनी गोद में समेटे हुए हैं और सबका पालनहार हैं।

श्लोक संख्या: **10.34**

> मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् |
> कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा || **34** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं सबका हरण करने वाली 'मृत्यु' हूँ और भविष्य में उत्पन्न होने वालों का 'उत्पत्ति-कारण' हूँ। स्त्रियों में कीर्ति, श्री (लक्ष्मी), वाक् (वाणी), स्मृति, मेधा (बुद्धि), धृति (धैर्य) और क्षमा—ये दिव्य गुण मैं ही हूँ।

सरल व्याख्या:

मृत्यु कड़वा सच है, पर वह भी प्रभु का ही एक रूप है जो पुराने को मिटाकर नये के लिए जगह बनाता है। मनुष्यों के भीतर जो सद्गुण जैसे—सुयश, शोभा, मधुर वाणी, याददाश्त, बुद्धि, धीरज और माफ करने की शक्ति है, ये कोमल और शक्तिशाली भाव साक्षात ईश्वर की ही चमक हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन का अंत, नई शुरुआत और हमारे भीतर की चारित्रिक महानता, सब प्रभु की ही विभूतियाँ हैं।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.35**

> बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम् |
>
> मासानां मार्गशीर्षोऽहं ऋतूनां कुसुमाकरः || **35** ||

हिन्दी अनुवाद:

गायी जाने वाली श्रुतियों में मैं 'बृहत्साम' हूँ, छंदों में मैं 'गायत्री' हूँ। महीनों में मैं 'मार्गशीर्ष' (अगहन) हूँ और ऋतुओं में 'वसंत' हूँ।

सरल व्याख्या:

संगीत और मंत्रों के माध्यम से जो ईश्वर की स्तुति होती है, उसमें बृहत्साम और परम पावन गायत्री मंत्र ईश्वर की ही शक्ति हैं। महीनों में अपनी अनुकूलता के कारण मार्गशीर्ष और फूलों के खिलने व आनंद की ऋतु 'वसंत' (कुसुमाकर) के रूप में परमात्मा अपनी सुंदरता प्रकट करते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... प्रकृति के सौंदर्य और पवित्र मंत्रों की ध्वनि में परमात्मा का वास है।

श्लोक संख्या: **10.36**

> द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् |
>
> जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम् || **36** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं छल करने वालों में 'जुआ' हूँ, तेजस्वियों का 'तेज' हूँ। मैं जीतने वालों की 'विजय' हूँ, निश्चय करने वालों का 'निश्चय' हूँ और सात्विक पुरुषों का 'सत्व' (सात्विक भाव) हूँ।

सरल व्याख्या:

यहाँ भगवान एक चौंकाने वाली बात कहते हैं कि छली के छल (जुआ) की शक्ति भी मैं ही हूँ—अर्थात मुझसे बाहर कुछ नहीं है। प्रभावशाली व्यक्तियों का जो प्रभाव है, विजेता की जो जीत है और दृढ़ संकल्प वाले का जो 'निश्चय' है, वह सब ईश्वर की दी हुई सामर्थ्य ही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पराक्रम, विजय और अटल निश्चय के पीछे ईश्वरीय ऊर्जा ही कार्य करती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.37**

> वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः |
>
> मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः || **37** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं वृष्णि-वंशियों में 'वासुदेव' (स्वयं श्रीकृष्ण) हूँ, पांडवों में 'धनंजय' (अर्जुन) हूँ, मुनियों में 'व्यास' हूँ और कवियों में 'शुक्राचार्य' हूँ।

सरल व्याख्या:

भगवान अपने सखा अर्जुन से कहते हैं कि तुम्हारे भीतर जो युद्ध कौशल और तेज है, वह मेरी ही विभूति है। मुनियों में वेदव्यास, जिन्होंने वेदों को व्यवस्थित किया, और कवियों में महान मेधावी शुक्राचार्य के रूप में वही चैतन्य शक्ति प्रकट हो रही है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... श्रेष्ठ पुरुषों की प्रतिभा और उनके असाधारण कार्य ईश्वर की ही अभिव्यक्ति हैं।

श्लोक संख्या: **10.38**

> दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् |
>
> मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् || **38** ||

हिन्दी अनुवाद:

मैं दमन करने वालों का 'दंड' हूँ, विजय चाहने वालों की 'नीति' हूँ। रहस्यों में मैं 'मौन' हूँ और ज्ञानियों का 'तत्त्वज्ञान' हूँ।

सरल व्याख्या:

अनुशासन और न्याय के लिए जो दंड दिया जाता है, वह व्यवस्था प्रभु की है। जीतने के लिए जो सही नीति (धर्म) अपनाई जाती है, वह भी ईश्वर है। रहस्यों को सुरक्षित रखने के लिए 'मौन' सबसे बड़ी शक्ति है, और किसी भी ज्ञानी की जो वास्तविक समझ है, वह केवल परमात्मा का प्रकाश है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... न्याय, नीति, गहराई और ज्ञान—इन सबका परम केंद्र परमात्मा ही है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.39**

> यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन |
> न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् || **39** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे अर्जुन! जो समस्त प्राणियों की उत्पत्ति का 'बीज' (मूल कारण) है, वह मैं ही हूँ। ऐसा कोई भी चर या अचर प्राणी नहीं है, जो मेरे बिना अस्तित्व में रह सके।

सरल व्याख्या:

भगवान समस्त विवरणों को एक सूत्र में पिरोते हुए कहते हैं कि जो भी जन्म लेता है, उसका 'बीज' मैं ही हूँ। जैसे मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता, वैसे ही परमात्मा के बिना संसार की किसी भी वस्तु या जीव की कल्पना नहीं की जा सकती। वह सबमें व्याप्त है और सब उससे ही हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा ही समस्त सृष्टि का अनिवार्य घटक और मूल कारण है।

श्लोक संख्या: **10.40**

> नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप |
> एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया || **40** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे परंतप! मेरी दिव्य विभूतियों का कोई अंत नहीं है। मैंने तो यह अपनी विभूतियों का विस्तार तेरे लिए संक्षेप में (केवल उदाहरण के तौर पर) कहा है।

सरल व्याख्या:

भगवान स्पष्ट करते हैं कि उनकी महिमा अनंत है। सूर्य की किरणों को कोई गिन नहीं सकता, वैसे ही परमात्मा के रूपों का अंत नहीं पाया जा सकता। अर्जुन को समझाने के लिए उन्होंने केवल कुछ मुख्य उदाहरण दिए हैं ताकि वह संसार के हर रूप में प्रभु की उपस्थिति का संकेत समझ सके।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा असीम हैं, उनकी अनंत महिमा को केवल कुछ शब्दों या उदाहरणों में पूरी तरह नहीं समेटा जा सकता।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **10.41**

> यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा |
> तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् || **41** ||

हिन्दी अनुवाद:
जो-जो भी ऐश्वर्ययुक्त, कान्तियुक्त और शक्तिमान वस्तु या प्राणी है, उस-उसको तू मेरे ही तेज के एक अंश से उत्पन्न हुआ जान।

सरल व्याख्या:
भगवान ने एक बहुत बड़ा सूत्र दे दिया है। वे कहते हैं कि तुम्हें पूरी सूची याद रखने की ज़रूरत नहीं है। जहाँ भी तुम्हें कोई विशेष प्रतिभा, कोई अद्भुत सुंदरता, कोई महान शक्ति या कोई विलक्षण प्रभाव दिखाई दे—चाहे वह किसी इंसान में हो, प्रकृति में हो या पशु-पक्षी में—उसे मेरा ही एक छोटा सा 'अंश' समझना। वह चमक उनकी अपनी नहीं, बल्कि मेरे ही तेज की एक किरण है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संसार की हर विशिष्टता और महानता उस अनंत परमात्मा की ही एक आंशिक अभिव्यक्ति है।

श्लोक संख्या: **10.42**

> अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन |
> विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् || **42** ||

हिन्दी अनुवाद:
अथवा हे अर्जुन! इस बहुत से विस्तार को जानने से तेरा क्या प्रयोजन है? मैं इस संपूर्ण जगत को अपने (योग-शक्ति के) किसी एक अंश मात्र से धारण करके स्थित हूँ।

सरल व्याख्या:
अध्याय के अंत में भगवान अपनी असीमता प्रकट करते हैं। वे कहते हैं कि "अर्जुन! तुम अलग-अलग विभूतियों को कहाँ तक गिनोगे? सच तो यह है कि यह पूरा अनंत ब्रह्मांड, जो तुम्हें इतना विशाल दिखता है, यह मेरी शक्ति के मात्र 'एक छोटे से हिस्से' (अंश) में टिका हुआ है।" मैं इस संसार से कहीं बहुत बड़ा और परे हूँ।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... परमात्मा केवल संसार के भीतर ही नहीं हैं, बल्कि यह पूरा संसार उनके एक छोटे से अंश में समाया हुआ है।

Satyaanubhuti Ashram

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥

Satyaanubhuti Ashram